''जैसलमेर की प्रसिद्ध हवेलियों का कलात्मक अध्ययन''

दयालबाग़ शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय)
आगरा से चित्रकला में पी॰एच॰डी॰ की उपाधि की
आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत शोध–प्रबंध
की रूपरेखा

संकाय प्रमुख की संस्तुति

प्रो०उर्मिला आनन्द,
अध्यक्ष संस्कृत विभाग,
विभाग
कला संकाय,
डी०ई०आई०डीम्ड यूनिवर्सिटी
दयालबाग, आगरा

विभागाध्यक्ष की संस्तुति

प्रो०रागिनी रॉय
अध्यक्ष ड्राइंग एण्ड पेन्टिग

कला संकाय,
डी०ई०आई०डीम्ड यूनिवर्सिटी
दयालबाग, आगरा

शोध निर्देशक

प्रो. अश्विनी कुमार शर्मा
ड्राइंग एण्ड पेन्टिग विभाग
कला संकाय,
डी०ई०आई०डीम्ड यूनिवर्सिटी
दयालबाग, आगरा

शोध छात्रा

प्रगति गर्ग
ड्राइंग एण्ड पेन्टिग विभाग
कला संकाय,
डी०ई०आई०डीम्ड यूनिवर्सिटी
दयालबाग, आगरा

शोध संकल्पना :–

भारत में कला लोकरंजन का पर्याय माना गया है। यह भावाभिव्यक्ति, सौन्दर्यानुभूति की संवाहिका है। कला मानव को सौन्दर्य प्रदान करती है। कला का उद्देश्य मानव की भावात्मक एकता स्थापित करना है, इसलिये भाव के रूप में स्थापित करने का कठोर माध्यम वास्तु और मूर्तिकला बना, जिसके प्रत्यक्ष प्रमाण भारत में विशाल कलात्मक वास्तु स्थापत्य हैं। भारतीय चित्रकार या शिल्पी सत्य या शिव के साथ–साथ सुन्दर की कल्पना भी करता है। अतएव सुन्दर तथा आदर्श रुप की रचना के लिए वह अलंकरणों का अपनी सृजनाओं में प्रयोग करता है और आकृतियों के रुपश्री का वर्णन करता है।

भारतीय सांस्कृतिक निधि अपनी कला रूपी सम्पदाओं से भरी पड़ी है। उन कलाओं में से स्थापत्य कला अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। स्थापत्य कला सदियों से अपना सौन्दर्य मुखरित करती आ रही है। भारत में स्थापत्य का अद्भुत नमूना सिन्धु घाटी की खुदाई में प्राप्त हुआ, जो कि एक सुगम नगर सभ्यता के रूप में प्राप्त हुई। *भारतीय वास्तु कला के प्रारम्भिक अवशेष हड़प्पा, मोहन–जोदाड़ो, रोपड़, कालीबंगा, लोथल तथा रंगपुर में पाए गए हैं। इन्हें सिन्धु घाटी की सभ्यता या हड़प्पा संस्कृति (सभ्यता) के रूप में जाना जाता है।* धीरे–धीरे बदलते समय के साथ स्थापत्य कला का विकास हुआ और वह अपने सौन्दर्य का विराट रूप धारण करती गयी। भारतीय स्थापत्य में अलंकरण का उत्कृष्ट रुप दिखाई देता है। अजन्ता में छतों के अलंकरणों, राजपूत तथा मुगल चित्रों के हाशिये व स्थापत्य संसार में अलंकारिता के सुन्दर उदाहरण हैं।

कला संस्कृति, भक्ति, शौर्य व प्राकृतिक सौन्दर्य सभी पक्ष राजस्थान की मूल धरोहर है। उत्तर भारत के स्थापत्य की दृष्टि से राजस्थान का विशेष महत्व है। राजस्थान में स्थित जैसलमेर अपने स्थापत्य के लिये राजस्थान में ही नहीं वरन् सम्पूर्ण देश–विदेश में ख्याति प्राप्त है।

जैसलमेर की स्थापना महारावल जैसल द्वारा 1156 ई. में की थी, अद्भुत किले, कलात्मक राज प्रासाद, हवेलियाँ प्रत्येक की अपनी अनूठी वास्तु शिल्प संरचना हैं। महान चित्रकारों, शिल्पकारों व कला प्रेमियों के इस नगर में स्थापत्य के बहुत उत्कृष्ट नमूने हैं जो अपने सौन्दर्य से देश–विदेश से आने वाले हज़ारों पर्यटक, प्रतिदिन इन इमारतों को देखकर हैरत में पड़ जाते हैं कि रेगिस्तान में भी ऐसी शानदार वास्तुकला की परम्परा है। पश्चिम राजस्थान में इन केन्द्रों पर केवल चित्रों की सुन्दरता ही नहीं बल्कि पाकिस्तान से सटे *जैसलमेर नगर में पटुओं की हवेली, नथमल की हवेली, सालिम सिंह की हवेली व सोनार किले में* वास्तु स्थापत्य व कलात्मक अलंकरणों का सुन्दर समन्वय देखने को मिलता है। अलंकरण से आकर्षण प्राप्त होता है। अतः कला का कार्य अलंकरण करना भी है।

हवेलियों में उत्कीर्ण जालियां, स्तम्भ, छत, छज्जे, बाहरी दीवारों पर शिल्प सौन्दर्य देखते ही बनता है।

साहित्यिक पुनरवलोकन :—

मेरे शोध का विषय *''जैसलमेर की प्रसिद्ध हवेलियों का कलात्मक अध्ययन'' है।* अपने विषय से सम्बन्धित मैंने कई पुस्तकें पढ़ीं जिनसे मुझे मेरे विषय पर कार्य करने में सहायता मिली। *श्री नन्द किशोर शर्मा* की पुस्तक *''जैसलमेर राज्य का राजनीतिक इतिहास''* व *''सुनहरा नगर जैसलमेर''* जिनके अध्ययन से मैंने जैसलमेर के इतिहास के बारे में जाना। जिसमें जैसलमेर की स्थापना, कलात्मक विकास की जानकारी प्राप्त हुई। दूसरी पुस्तक के अध्ययन से सम्पूर्ण जैसलमेर के स्थापत्य का विवरण मिला। मैंने किले, मन्दिर, हवेलियों के बारे में जानकारी प्राप्त की, हवेलियों में अलंकृत आकृतियां सौन्दर्य से परिपूर्ण झरोखे, छज्जे, दीवारों का सौन्दर्य जो सम्पुर्ण हवेलियों के सौन्दर्य में मुख्य विशेषताओं के बारे में जाना। *श्री भगवत लाल शर्मा, नीरज, जयसिंह की पुस्तक ''राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा''* जिसके अध्ययन से राजस्थान के सांस्कृतिक परिवेश व रहन—सहन रीति रिवाज़ की जानकारी प्राप्त हई। *R.A. Agrawal* की पुस्तक *History Art and architecture of Jaisalmer*। जिसके अध्ययन के अन्तर्गत जैसलमेर के स्थापत्य के बारे में जाना। शोध कार्य से सम्बन्धित कई वेबसाइट, समाचार पत्र—पत्रिकाऐं, सूचिपत्र (कैटलॉग) व छायाचित्रों से सहयोग मिला। विषय चयन के दौरान मैंने जैसलमेर का भ्रमण किया और स्थानीय लोगों के साथ वार्तालाप की व *संग्रहालय मरूसंस्कृति केन्द्र के संस्थापक श्री नन्दकिशोर शर्मा* से मिली और जैसलमेर के बारे में जाना, श्री नन्दकिशोर शर्मा से साक्षात्कार से मुझे शोध कार्य की रूपरेखा निर्धारित करने में सहायता मिली।

परिकल्पना :—

मनुष्य के सृजनात्मक बाह्य मूर्त रूप को जिस सन्तुलन, अनुपात और सामन्जस्य के कौशल, मनोभावों के आनन्द व अनुपम अनुभूति उत्पन्न करने वाले वास्तुशिल्प का अध्ययन।

- राजस्थान के वास्तु स्थापत्य एवं उसके स्वरूप को बताते हुये हवेली का अर्थ, क्षेत्र, निर्माण के कारण व हवेलियों में विभिन्न स्वरूपों में कलात्मक अलंकरणों पर कार्य करूँगी।
- भवन व स्थापत्य में अलंकरण कला का प्रारूप कब से शुरू हुआ?
- अलंकरणात्मक जाली एवं झरोखों की नगरी जैसलमेर की कलात्मक वैविध्यपूर्ण हवेलियों का अध्ययन करूँगी।
- जैसलमेर की सांस्कृतिक परम्परा व ऐतिहासिकता के साथ स्थापत्य की भिन्नताओं को उजागर करने का प्रयास करूँगी।

- जैसलमेर हवेलियों की निर्माण सामग्री वास्तुकार, चित्रकार व शिल्पकारों के कलात्मक कार्यों का अध्ययन करूँगी।
- जैसलमेर की पत्थर की हवेलियों में पत्थर की कोराई और झराई का कार्य इतना अलंकारिक है कि शिल्पकारों की कला पर आश्चर्य होता है, उसे जानने का प्रयास करूँगी।
- हवेलियों में सौन्दर्यात्मक प्रभाव में अंलकरण की भूमिका व मुगल स्थापत्य में प्रयुक्त अलंकरणों का तुलनात्मक अध्ययन करूँगी।

लक्ष्य एवं उद्देश्य :–

जैसलमेर के हवेली स्थापत्य पर शोध कार्य प्रस्तुत करना व प्रमुख रूप से हवेलियों के अलंकरणों पर कार्य करना व उसके कलात्मक सौन्दर्य को उजागर कर प्रकाश में लाना है। इस मरूभूमि रेगिस्तान में इस तरह का ऐसा सौन्दर्यात्मक स्थापत्य के क्या कारण रहे? क्या यहाँ के लोगों की अभिरुचि ऐसी रही कि जिसे ''रंगीलो म्हारो राजस्थान'' कहा जाता है या पर्यटक स्थल बनाया या अर्थोपार्जन रहा है या प्रारम्भ से ही यहाँ के राजाओं या धनिक वर्ग की रुचि शिल्प कला में रही है आदि इन सभी दृष्टिकोणों को ध्यान में रखकर व अलंकरणों का विकास कैसे हुआ आदि का अध्ययन करना मेरे इस शोध कार्य का उद्देश्य है।

चर :–

स्थानीय हवेलियां, अन्य हवेलियां, स्थानीय संग्रहालय आदि।

कार्य प्रणाली :–

अनुसन्धान अभिकल्प :–

दृश्यात्मक शोध कार्य में जैसलमेर की हवेलियों में वास्तु स्थापत्य के अनेक रूप अद्भुत कारीगरी के साथ उकेरे गये अलंकरणों का कलात्मक अध्ययन।

प्रदत्य संकलन :–

प्राथमिक एवं द्वितीयक।

प्राथमिक :–

हवेलियों का अवलोकन, वर्तमान कार्यरत शिल्पकारों से साक्षात्कार, स्थानीय संग्रहालय।

द्वितीयक :–

पुस्तकें, प्रकाशित पत्र–पत्रिकाऐं, समाचार पत्र, सूचिपत्र (कैटलॉग), वेबसाइट, शोध निर्देश एवं विचार–विमर्श, शोध पत्र।

प्रतिदर्श :–

हवेलियों में प्रयुक्त अलंकरणों व अन्य सौन्दर्यात्मक उपादानों के छाया चित्र लगभग 100 से 150 तक।

साक्षात्कार :–

स्थानीय इतिहासवेत्ताओं व साहित्यकारों से, शिल्पकारों से, संग्रहालय संरक्षक व पुरातत्ववेत्ताओं के साथ साक्षात्कार।

सीमा :–

कार्य एवं सीमा को ध्यान में रखते हुए जैसलमेर की केवल प्रसिद्ध हवेलियों का कलात्मक अध्ययन किया जायेगा।

"जैसलमेर की प्रसिद्ध पटवों की हवेली का कलात्मक अध्ययन"

शोध संरचना

विषय सूची

विषय प्रवेश :— भारतीय स्थापत्य कला का परिचय।

अध्याय प्रथम :— राजस्थान की वास्तु स्थापत्य एवं उसके स्वरूप।

1.1— जैसलमेर की स्थापत्य कला का विवेचन

1.2— हवेली का अर्थ व क्षेत्र, निर्माण के कारण व हवेलियों के विभिन्न स्वरूप, मन्दिर, महल, मकान आदि।

अध्याय द्वितीय :— जैसलमेर की वास्तु कला की दृष्टि से प्रसिद्ध हवेलियों का कलात्मक अध्ययन।

2.1— पाटवों की हवेली

2.2— नथमल की हवेली

2.3— सालिम सिंह की हवेली

2.4— सोनार किला व अन्य

अध्याय तृतीय :— जैसलमेर की हवेलियों में उत्कीर्ण अलंकरणों का अध्ययन।

3.1— स्थापत्य व भवन में अलंकरणात्मक अभिप्राय एवं परम्परा का प्रारूप भारतीय परिप्रेक्ष्य में

3.2— हवेलियों में अलंकरण प्रवृत्ति

3.3— पत्थर में उत्कीर्ण कला की उपलब्धता

अध्याय चतुर्थ :— जैसलमेर की कलात्मक हवेलियों का तकनीकी अध्ययन।

4.1— निमार्ण सामग्री

4.2– वास्तुकार

4.3– पत्थर में उत्कीर्ण कला के चित्रकार व शिल्पकार

<u>अध्याय पंचम</u> :– हवेलियों में दृश्यात्मक प्रभाव में अलंकरणों की भूमिका।

5.1– अलंकरणों का वर्गीकरण, बेलबूटे, ज्यामितीय अलंकरण, प्राकृतिक परिवेश, पशु–पक्षी व अन्य।

5.2– जैसलमेर स्थापत्य व मुगल स्थापत्य में प्रयुक्त अलंकरणों का तुलनात्मक अध्ययन।

<u>अध्याय षष्ठम्</u> :– उपसंहार

6.1– जैसलमेर के हवेली स्थपात्य में अलंकरणों का आधुनिक परिवेश में योगदान

<u>सन्दर्भ ग्रन्थ सूची</u> :–

- हिन्दी
- अंग्रेजी
- शोध पत्र–पत्रिकाऐं
- सूचिपत्र (कैटलॉग)
- समाचार पत्र
- वेबसाइटस
- चित्र–सूची

<u>परिषिष्ठ</u> :–

- मानचित्र
- कला–शब्द कोश
- समाचार–पत्र
- हवेलियों के नक्से,
- अन्य दस्तावेज

चित्र सं0– 1 भारत के मानचित्र में जैसलमेर की स्थिति

चित्र सं0– 2 राजस्थान के मानचित्र में जैसलमेर की स्थिति

अनुसन्धान अभिकल्प

प्रथम अध्याय :– प्रथम अध्याय में राजस्थान की वास्तु स्थापत्य कला का स्वरूप रखा है। राजस्थान स्थित जैसलमेर की स्थापत्य कला का विवेचन करते हुये, हवेलियों के अर्थ व क्षेत्र, हवेलियों के निर्माण के कारण के साथ अनेक विभिन्न स्वरूपों में मंदिर किले महल हवेलियाँ आदि का अध्ययन।

द्वितीय अध्याय :– द्वितीय अध्याय के अर्न्तगत जैसलमेर की वास्तु कला की दृष्टि से प्रसिद्ध हवेलियों का कलात्मक अध्ययन में पटवों की हवेली, सालिम सिंह की हवेली व सोनार किला का अध्ययन करूँगी। जैसलमेर में कोरनी का कार्य करने वाले कलाकार कहाँ के थे? जैसलमेर कैसे आये? उन्होंने कहाँ और कौन–कौन से कार्य किये? कैसे–कैसे विकास हुआ? क्या धनाढ्य व राजाओं ने इनको संरक्षण दिया जिससे जैसलमेर राज्य में ऐसी भव्य पत्थर में अलंकरण कला का संरक्षण हुआ।

तृतीय अध्याय :– तृतीय अध्याय के अर्न्तगत जैसमेर की हवेलियों में उत्कीर्ण अलंकरण को स्थापत्य व भवन में अलंकरणात्मक अभिप्राय एवं परंपरा का प्रारूप भारतीय परिप्रेक्ष्य में हवेलियों की अलंकरण प्रकृति व पत्थर में उत्कीर्ण कला की उपलब्धता पर अध्ययन करूँगी।

चतुर्थ अध्याय :– चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत जैसलमेर की कलात्मक हवेलियों का तकनीकि अध्ययन में निर्माण सामग्री वास्तुकार, पत्थर में उत्कीर्ण कला की चित्रकार व शिल्पकार के बारे में प्राथमिक जानकारी एकत्रित करने का प्रयास करूँगी।

पंचम् अध्याय :– हवेलियों में दृश्यात्मक प्रभाव में अलंकरणों की भूमिका का विवरण प्रस्तुत करते हुये अलंकरणों के वर्गीकरण में बेलबूटे, ज्यामितीय अलंकरण, प्राकृतिक परिवेश पशु पक्षी व अन्य का कलात्मक अध्ययन प्रस्तुत करते हुये जैसलमेर स्थापत्य मुगल स्थापत्य में प्रयुक्त अलंकरणों का तुलनात्मक अध्ययन करूँगी।

षष्ठम् अध्याय :– उपसंहार के अन्तर्गत सम्पूर्ण कलात्मक पक्षों के आधार पर व स्थापत्य में अलंकरणों कि भूमिका शोध कार्य के उपरान्त प्रस्तुत करूँगी।

दिनाँक :– शोध छात्रा

प्रगति गर्ग

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, वासुदेव : भारतीय कला, पृथिवी प्रकाशन वी 1/54 अमेठी कोठी नगवा, वाराणसी– 221002.

2. अग्रवाल, श्याम : भारतीय चित्रकला का इतिहास, ज्वाला प्रसाद बिहारी विद्यासागर, इलाहाबाद– 111984.

3. उपाध्याय : 1981, भारतीय कला का इतिहास, पीपुल्स पब्लिशिंग (प्रा) लिमिटेड।

4. काला, सतीश चन्द्र : 1936, भारतीय चित्रकला, वैलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद।

5. गुप्ता, बेनी : 2004, राजस्थान का इतिहास, भाग–9 एवं–2, क्लासिक कलैक्शन, जयपुर।

6. चतुर्वेदी, गोपालमधुकर : 1982, भारतीय चित्रकला, ऐतिहासिक सन्दर्भ, जाग्रति प्रकाशन, अचला रोड, अलीगढ।

7. जोशी, महेश चन्द : 1994, युग युगीन भारतीय कला, आदित्य ऑफसैट प्रेस, दिल्ली।

8. द्विवेदी, प्रेम शंकर : 2007, भारतीय चित्रकला के विविध आयाम, कला प्रकाशन, वाराणसी।

9. दास, राय कृष्ण : 1959, भारत की चित्रकला, भारतीय भण्डार प्रयाग।

10. नीरज, जयसिंह वेलामाथुर : 1989, राजस्थान सांस्कृतिक परम्परा राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर।

11. नागौरी, एस. एल, श्रीमती कान्ता नागौरी : 1999, राजस्थान का इतिहास, पौइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर।

12. भल्ला, लाजपतराय : 1985, सामयिक राजस्थान (राजस्थान समाज, कला एवं संस्कृति) कुलदीप पब्लिकेशन्स, जयपुर।

13. रावत, बृजेश : जैन प्रतिमा कला, स्वाति पब्लिकेशन्स 34, सैन्ट्रल मार्केट अशोक नगर विहार, दिल्ली—110052

14. वात्सायन, सच्चिदानन्द : भारतीय कला दृष्टि, प्रभात—चावडी बाजार दिल्ली।

15. वैश्य, रीता प्रताप : भारतीय चित्रकला एवं मूर्ति कला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

16. शर्मा भगवती लाल नीरज, जयपुर : राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

17. शर्मा, नन्दकिशोर : 2005, त्रिकूट गढ, जैसलमेर सीमान्त प्रकाशन, नवीन संस्करण।

18. शर्मा, नन्दकिशोर : 2011, जैसलमेर का सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, सीमान्त प्रकाशन, द्वितीय संस्करण।

19. शर्मा, नन्दकिशोर : जैसलमेर की हवेलियाँ, सीमान्त प्रकाशन जैसलमेर।

20. शर्मा, नन्दकिशोर : सुनहरा नगर जैसलमेर, सीमान्त प्रकाशन जैसलमेर।

21. शर्मा, नन्दकिशोर : 1993, जैसलमेर राज्य का राजनीतिक इतिहास, सीमान्त प्रकाशन, जैसलमेर।

22. शर्मा, सुनीता अश्विनी : 2012, शेखावटी के वास्तु—सम्बन्ध काष्ठ शिल्प, एसोसियेट पब्लिशिंग हाउस ब्लाक — 77, संजय प्लेस, आगरा 282002.

BIBLIOGRAPHY

1. Agarwal, R.A. : 1979, *History, Art and Architecture of Jaisalmer*, Agam Kala Prakashan Delhi.

2. Chopra, P.N. : *Indian Art and Architecture in Ancient and Medieval Periods*, New Delhi-110001

3. Dwivedi, Shivakant : 1991, *Temple Sculptures of India*, Agam Kala Prakashan, New Delhi.

4. Hevell, Ernest : *Indian Sculpture and Painting* Cosmopublication, 24-B Assari Binfield Road, New Delhi-110002

5. Hevell, Ernest : 1920, *A Handbook of Indian Art*.John Murry.Albemerlestreet.Binfield W. London.

6. Nath. R. : *Historiographical Study of Indo Muslim Architecture.*

7. Prabhakar, Manohar : 1972,*Cultural Heritage of Rajasthan*, Panchsheel Prakashan, Jaipur .

8. Tillostson, Giles Henry : *Paradigms of Indian Architecture Space and Time in Representation and Design*. Manzor Khan, Oxford University Press, XMCA Library Building Jaising Road, New Delhi.

9. Valwanson, : *Living Architecture India*, Oxford and IBH Publishing Co. Andrews Calcutta.

10. Mitter, Partha : *Indian Art*, First Published in 2001 by Oxford University Press

पत्र–पत्रिकायें

- कला दीर्घा, अवधेश मिश्रा, अप्रैल 2013
- मोहन, सौमित्र, समकालीन कला
- पुराकला, प्रो0 गिर्राज कुमार

WEBSITES

- en.wikipedia.org/wiki/jaisalmer
- www.jaisalmer.nic.in/
- www.flameedu.in/discover-india-program/projects/jaisalmer.
- www.jaisalmer.org.uk.
- www.indiaetzone.com/19/culture-jaisalmer-city.htm.
- www.jaisalmerdesertfestival.com
- www.mapsofindia.com/jaisalmer/culture-and-festival.htm.
- www.veethi.com/places/arts-and-culture.jaisalmer-district-photos-507-1.htm

जैसलमेर, पटवों की हवेली सन् 1800—1860

जैसलमेर, पटवों की हवेली बाहरी अलंकरण

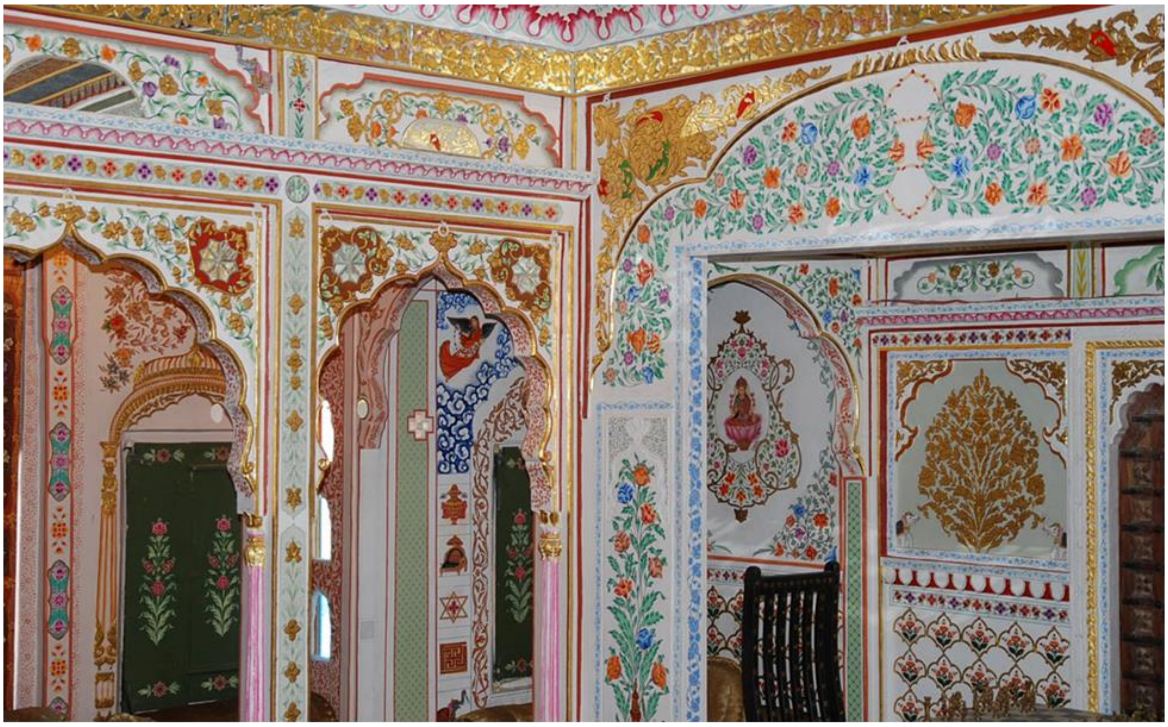

जैसलमेर, हवेली की दीवारों का आन्तरिक अलंकरण

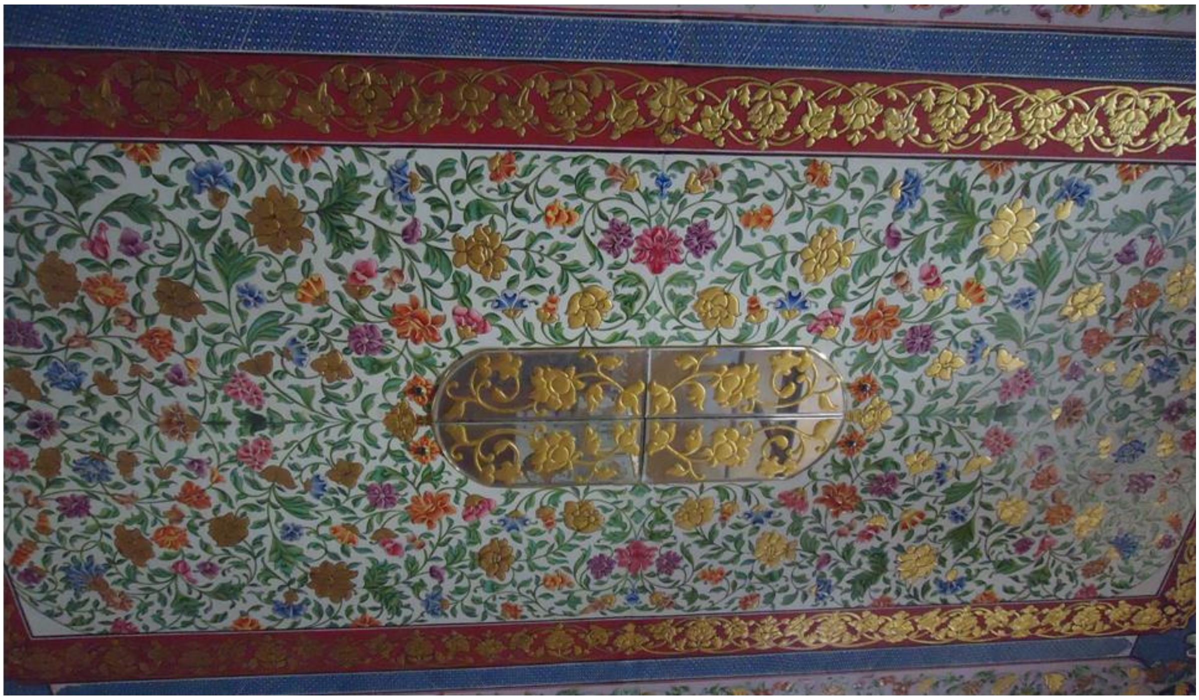

जैसलमेर, हवेली छत अलंकरण

जैसलमेर, हवेलियों में निर्मित झरोखे

जैसलमेर, सालिम सिंह हवेली 1876–1880

जैसलमेर, दीवान नथमल हवेली वि सं 1941– सन् 1885

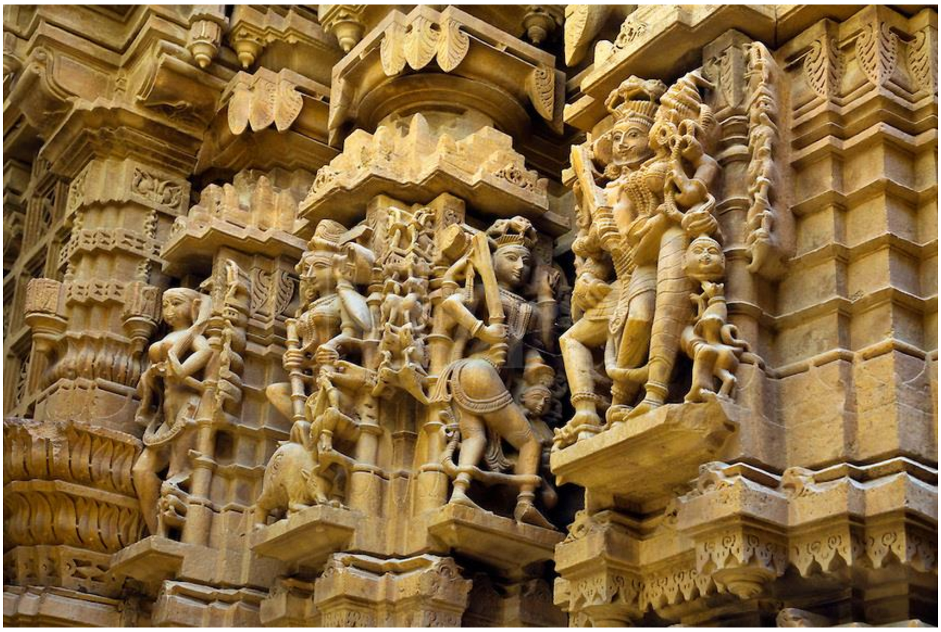

जैसलमेर दुर्ग स्थित पार्श्वनाथ मन्दिर

मन्दिर का प्रवेश द्वार

छत उत्कीर्णन